ओ३म्

Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र | जनवरी 2020 (प्रथम)

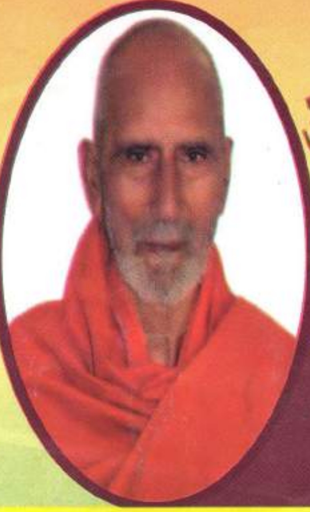

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर आयोजित

स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

स्थान - दयानन्द मठ रोहतक | समय - प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक

दिनांक - 02 फरवरी 2020 (रविवार)

आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ रोहतक
8901387993, 9416874035, 9911197073, 9416503513, 9813235339

Email : aryapsharyana@yahoo.in | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | Visit us : www.apsharyana.org

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में ध्वजारोहण करते सभा पदाधिकारीगण साथ में हैं भजनोपदेशक परिषद् के पदाधिकारीगण।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में अपनी प्रस्तुति देते हुए योगेश दत्त आर्य।

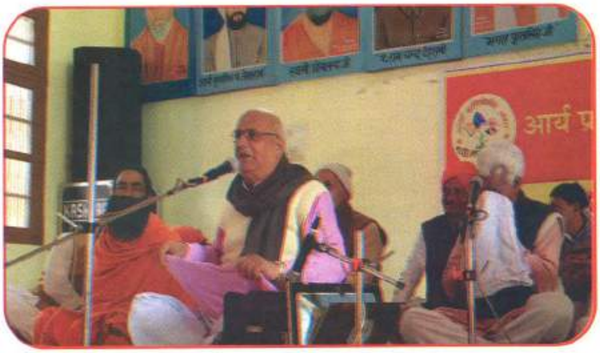

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में अपनी प्रस्तुति देते हुए सहदेव बेधड़क जी।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में अपनी प्रस्तुति देते हुए भाई कुलदीप आर्य।

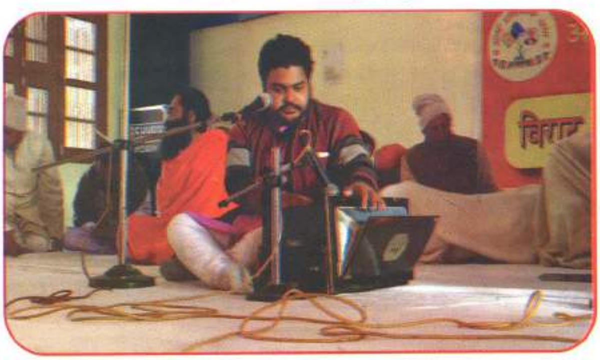

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में अपनी प्रस्तुति देते हुए सुमित्र आर्य।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में अपनी प्रस्तुति देते हुए वैद्य नन्दराम आर्य।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में अपनी प्रस्तुति देते हुए बहन अंजली आर्या।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में अपनी प्रस्तुति देते हुए भाई भूपेन्द्र प्रेमी।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120
विक्रम संवत् 2076
दयानन्दाब्द 196

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 15 अंक 21

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जनवरी, 2020 (प्रथम)
1 से 15 जनवरी, 2020 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय– स्वामी श्रद्धानन्द–एक विलक्षण व्यक्तित्व ... 2
2. जिज्ञासा-विमर्श (साधना/मोक्ष) ... 4
3. 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के उद्घोषक नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस के 123वें जन्म दिवस पर उनके कुछ संस्करण ... 6
4. सी.ए.ए. आवश्यक व देशहित में है ... 8
5. मानवजाति की अन्यान्योत्तम सम्पत्ति ईश्वर एवं वेद ... 9
6. मकरसंक्रान्ति–क्या प्रेरणा लें ... 11
7. सच का आईना–आर्यसमाज ... 12
8. शहीदों के लिए/प्रेरक वचन ... 13
9. स्वास्थ्य-चर्चा–जौ का पानी पीने से.... ... 14
10. समाचार-प्रभाग ... 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय... स्वामी श्रद्धानन्द—एक विलक्षण व्यक्तित्व

❑ उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम भारतवर्ष के इतिहास में सदा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। उनके पावन कर्मों की मधुर स्मृतियाँ किस राष्ट्रभक्त के हृदय को विद्रावित

नहीं करती होंगी। जिस महान् आत्मा ने भारत को अखण्ड एवं रामराज्य बनाने का स्वप्न न केवल अपने हृदय में संजोये थे प्रत्युत उन्हें साकार करने में ही अपने समस्त जीवन की आहुति राष्ट्रयज्ञ में दे दी थी, क्या हम उनके बलिदान दिवस पर उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का सत्यव्रत धारण नहीं करेंगे, क्या हम इतने अभागे और मृतप्राय: हो गये हैं कि उनके द्वारा चलाये गये विभिन्न जन उपयोगी कार्यों को छिन्न-भिन्न होता देखकर भी अनदेखी करते रहेंगे। आर्यो जागो! इस महान् बलिदानी के बलिदान दिवस पर कुछ संकल्प लेवें। अपनी निष्कर्मण्यता और चिरनिद्रा व स्वार्थमयी वृत्तियों को छोड़कर नवचेतना जगाएँ। अपनी प्रसुप्त दिव्य शक्तियों को प्रबुद्ध कर अपने धर्म की अनन्य निष्ठा एवं श्रद्धा रक्षा करने में तत्पर हो जाएँ।

अपने पिता कोतवाल नानकचन्द के समीप बीस वर्ष की आयु में रहकर वहीं से बी.ए. करके पुन: वकालत की शिक्षा नवयवुक मुंशीराम ने प्राप्त की। अंग्रेजी शिक्षा व सभ्यता में रहने से वे अंग्रेजी भाषा के ज्ञाता को विद्वान्, गुणी तथा सर्वगुणसम्पन्न मानते थे। नास्तिक गुरुओं के सम्पर्क में रहने से उनका ईश्वर की सत्ता पर भी विश्वास न था। संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत आदि पर उनकी किसी प्रकार की आस्था न थी। पिता नानकचन्द आस्तिक विचारों के व्यक्ति थे। पुत्र की नास्तिकता उन्हें पसन्द न थी। वे प्राचीन विचारधारा के पोषक थे। पुत्र को आस्तिक बनाने में सदा तत्पर रहते थे। पर अंग्रेजी शिक्षा, सभ्यता से दीक्षित मुंशीराम पर इनका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

महर्षि दयानन्द के संपर्क में-पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव के कारण वे परमेश्वर की सत्ता पर भी संदेह करने लगे, परन्तु वे देर तक इस दशा में नहीं रह सके। शीघ्र ही उनका संपर्क महर्षि दयानन्द जी से हुआ, क्योंकि कोतवाल नानकचन्द उन दिनों बरेली में नौकरी करते थे तथा उसी समय महर्षि दयानन्द जी प्रचार के लिए बरेली में आए हुए थे। उनके पिता को आदेश मिला कि पंडित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों में शहर कोतवाल के नाते शान्ति व्यवस्था का प्रबन्ध करें। प्रबन्ध के लिए वे स्वयं सभा में गए और महर्षि के व्याख्यान से बड़े प्रभावित हुए। साथ ही उन्हें यह भी विश्वास हो गया था कि उनके नास्तिक पुत्र के संशयों का समाधान स्वामी जी के सत्संग से हो जाएगा। उन्होंने मुंशीराम से कहा, बेटा मुंशीराम! एक दण्डी स्वामी आए हुए हैं, बड़े विद्वान् और योगिराज हैं, उनके प्रवचन सुनकर तुम्हारे सभी संशय दूर हो जायेंगे। कल मेरे साथ चलना। मुंशीराम ने कह तो दिया कि चलूँगा, परन्तु मन में यह भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की क्या बात करेगा? अगले दिन मुंशीराम महर्षि दयानन्द जी के व्याख्यान सुनने के लिए बेगम बाग की कोठी पर गये, जहाँ महर्षि के व्याख्यान हो रहे थे। महर्षि जी की दिव्य मूर्ति को देखकर उनके मन में कुछ श्रद्धा पैदा हुई। जब पादरी स्कॉट और दो-तीन यूरोपियन को उत्सुकता से वहाँ बैठे देखा तो श्रद्धा और भी बढ़ गई। अभी 10 मिनट का व्याख्यान भी नहीं सुना था कि उन्होंने मन में सोचा केवल संस्कृतज्ञ होते हुए ऐसी युक्तियुक्त बातें करते हैं कि विद्वान् भी दंग रह जाएँ। उस दिन व्याख्यान परमात्मा के निज नाम 'ओ३म्' पर था। व्याख्यान के संबंध में मुंशीराम ने लिखा है कि "वह पहले दिन का आत्मिक आनन्द कभी भूल नहीं सकता।" उन पर महर्षि का ऐसा जादू हुआ कि दोपहर भोजन करते ही बेगम बाग की कोठी में पहुँच जाते और दो से चार बजे तक जो ऋषि दरबार लगता उसमें ऋषि को सबसे पहले नमस्ते करने वाले मुंशीराम ही होते। उनके प्रवचन से मुंशीराम का जीवन ही बदल गया। महर्षि के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए ये उद्गार प्रकट किए थे, "ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके हैं परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पटल पर ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्मल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट की। परमात्मा के बिना कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार के प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है। अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे सहवास ने मुझ कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने योग्य बनाया। नास्तिक

रहते हुए भी वास्तविक आनन्द में निमग्न कर देना ऋषि आत्मा का ही काम है।''

आर्यसमाज की ओर-जब वे लाहौर में वकालत कर रहे थे, उन्होंने भिन्न-भिन्न धर्मों की जितनी पुस्तकें उपलब्ध हो सकी, खरीदी और पूर्ण मनोयोग से पढ़ना शुरू कर दिया। इसी बीच उनके मन में पुनर्जन्म और कर्मफल के सम्बन्ध में जिज्ञासा हुई। उन्होंने महर्षि दयानन्द और पादरी स्कॉट के साथ हुए शास्त्रार्थ का स्मरण आया कि सत्यार्थ प्रकाश में इसका समाधान मिल सकता है। तत्काल सत्यार्थप्रकाश खरीदा और पढ़ा तथा पूर्वजन्म के सिद्धान्त का फैसला कर लिया। तब से उन्हें विश्वास हो गया कि मैं आर्यसमाज का सभासद् बन सकता हूँ। इसी विचार के साथ वे आर्यसमाज लाहौर के सदस्य बने। लाहौर का आर्यसमाज बहुत सक्रिय था। लाला साईंदास के साथ बैठकर जब उन्होंने पहले रविवारीय सत्संग में आकर जो विचार व्यक्त किये थे उनका सारांश यह है- ''हम सब के कर्त्तव्य और मन्तव्य एक होने चाहिएं। जो वैदिक धर्म के एक-एक सिद्धान्त के अनुकूल अपना जीवन नहीं ढाल लेता, उसको उपदेशक बनने का साहस नहीं करना चाहिए। भाड़े के टट्टुओं से धर्म का प्रचार नहीं हो सकता। इस पवित्र कार्य के लिए स्वार्थत्यागी पुरुषों की आवश्यकता है।''

कन्या पाठशाला की स्थापना-महात्मा मुंशीराम की बड़ी बेटी वेदकुमारी जालन्धर के एक क्रिश्चियन स्कूल में पढ़ने जाती थी। 13 अक्तूबर 1888 के दिन जब मुंशीराम कचहरी से लौटकर आये तो वेदकुमारी ने पाठशाला में सिखाया गया यह भजन सुनाया-

ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया॥

इस भजन को सुनकर मुंशीराम के कान खड़े हो गए। तहकीकात से पता चला कि पाठशाला में आर्य-पुत्रियों को अपने शास्त्रों की निन्दा करनी सिखाई जाती है। तभी उन्होंने निश्चय किया कि विधर्मियों के संस्कारों से अपने बच्चों को बचाने का एक ही उपाय है कि अपनी पाठशाला खोली जाए। इसके लिए उन्होंने लाला देवराज के साथ विचार विमर्श किया और संवत् 1947 में यहाँ कन्या पाठशाला की स्थापना की, जो कालांतर में कन्या महाविद्यालय के नाम से सर्वप्रधान शिक्षा संस्थान में गिनी जाने लगी।

गुरुकुल की स्थापना-कन्या पाठशाला के पश्चात् वेद के इस मन्त्र को सार्थक करने के लिए आगे कदम बढ़ाए- ''**उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।**'' हिमालय की उपत्यका में गंगा के किनारे 1902 में गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना की, जो अपने ढंग का आश्रम प्रणाली पर संचालित पहला और अनूठा विद्या मन्दिर था, जिसका उद्देश्य वैदिक ज्ञान-विज्ञान आदर्शों और राष्ट्रीय एवं विश्वबन्धुत्व की भावनाओं से ओतप्रोत शरीर और मन के ब्रह्मचर्य से युक्त समाज को अच्छे चरित्रवान् नागरिक प्रदान करना था। इस शिक्षा का माध्यम आर्षभाषा (हिन्दी) थी। इस संस्था को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई और यही स्वामी जी महाराज का सर्वोत्कृष्ट स्मारक है, जिसकी उन्नति में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। यही वह संस्था है जिसकी ओर महात्मा गांधी अफ्रीका में रहते हुए सर्वप्रथम आकृष्ट हुए थे। जहाँ अफ्रीका से लौटने पर उनके अफ्रीका के आश्रम से साथ आए हुए कुछ व्यक्ति इस गुरुकुल में रुके थे। महात्मा गांधी के शब्दों में- ''गुरुकुल सच्चे अर्थों में पूर्णत: राष्ट्रीय संस्था है। आर्यसमाज का सर्वश्रेष्ठ कार्य गुरुकुल का संचालन है। मुझे मालूम है कि इसकी शक्ति का स्रोत महात्मा मुंशीराम का महान् व्यक्तित्व है। सरकारी सहायता के बिना उन्होंने इतनी विशाल संस्था को सफलता पूर्वक चलाया यह उनके ही वीरतापूर्ण जीवन के कारण सम्भव हो सका।''

संन्यास-1917 में महात्मा मुंशीराम ने संन्यास ग्रहण किया। गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव हो रहा था। इसी वर्ष उत्सव के बाद कनखल के निकट मायापुर वाटिका में महात्मा जी को संन्यास आश्रम में प्रविष्ट होना था। वे मायापुरी की तरफ बढ़े सम्पूर्ण गुरुकुलवासी और उत्सव पर आए नर-नारी उनके पीछे-पीछे चल पड़े। सभी लोग कह रहे थे, महात्मा जी गुरुकुल छोड़कर मत जाओ, हमें निराश्रय छोड़कर मत जाओ। प्राचार्य महात्मा मुंशीराम सन्तप्त हृदय होते हुए भी श्रीराम की तरह बिना पीछे देखे सर्वथा मौन अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जा रहे थे। संन्यास के समय स्वामी जी ने कहा, ''प्रभु की अत्यन्त कृपा है आप सदृश विशाल आर्यजनता के प्रेम, स्नेह, सहयोग और अनुकम्पा से मुझ सदृश एक अत्यन्त सामान्य व्यक्ति को जीवन के इस सर्वोच्च चतुर्थ आश्रम में प्रविष्ट होने का सौभाग्य मिला है। मेरा समूचा जीवन श्रद्धा से प्रेरित और उसी पर आधारित रहा है। इसलिए मैं अपना नाम श्रद्धानन्द रखता हूँ। इस नए जीवन में परमपिता प्रभु से बल, शक्ति और आप सबके आशीर्वाद, स्नेह एवं समयोग की कामना करता हूँ।'' इसी के साथ ही स्वामी जी के जीवन का नया अध्याय आरम्भ होता है। **क्रमश:....**

जिज्ञासा-विमर्श (साधना/मोक्ष)

❑ आचार्य सोमदेव, मलार्ना चौड़, सवाईमाधोपुर (राज०)

गतांक से आगे...

गंगा में स्नान करने की तो बात दूर रही, यदि सैकड़ों-सहस्त्रों कोश दूर से भी गंगा-गंगा कहे तो उसके सब पाप

नष्ट होकर वह 'विष्णुलोक' अर्थात् वैकुण्ठ को जाता है। यह पोपों का कथन है। प्रथम तो वैकुण्ठ ही इनका काल्पनिक है और गंगा का नाम लेने मात्र से यदि पाप छूटते हैं तो **वर्तमान के सभी अपराधी जो कि कारागृह में हैं, उनसे गंगा-गंगा कहलवाकर छोड़ देना चाहिए, क्योंकि इनके अनुसार गंगा कहने मात्र से पाप छूट जाते हैं तो अपराधी को कारागृह में रोक कर दण्ड क्यों दिया जाये?** हे पुराणपन्थियो! घर में तुम माँ का अपमान करो और गंगा कह दो, पिता और गुरु का अपमान करो और गंगा कह दो, देशद्रोह करो और गंगा कह दो, गोहत्या करो और गंगा कह दो, तुम्हें तो पाप लगेगा नहीं।

तुम तो अविद्या के पुजारी हो, स्वयं पापी होकर अन्यों को पापी बनाओगे। यदि बचना है तो वेद मार्ग अपनाओ और वेदानुसार जान लो कि किया हुआ पाप क्षमा नहीं होता, चाहे गंगा कहो या गंगा में डूब मरो।

और इन पुराणपन्थियों की लीला देखिए-

प्रात:काले शिवं दृष्ट्वा निशिपापं विनश्यति।
आजन्मकृतं मध्याह्ने सायाह्ने सप्तजन्मनाम्॥

इसका अर्थ-जो मनुष्य प्रात:काल में शिव अर्थात् लिङ्ग वा उसकी मूर्त्ति का दर्शन करे तो रात्रि में किया हुआ, मध्याह्न में दर्शन से जन्मभर का, सायंकाल में दर्शन करने से सात जन्मों का पाप छूट जाता है, यह दर्शन कहा माहात्म्य है।

अब देखिये इनकी मूढ़ता कि जब एक बार दर्शन करने मात्र से जन्म भर का नष्ट हो गया तो रोज-रोज (नित्यप्रति) दर्शन की अब क्या आवश्यकता रह गई? इनकी मान्यता अनुसार तो रात-दिन वा जन्म भर पाप करते रहो और शिव दर्शन कर लो, सब पाप नष्ट हो जायेंगे। इनको यह नहीं पता कि ऐसा विश्वास कर अधिक-अधिक पाप कर अपने इस लोक और परलोक दोनों का नाश करेंगे। इसलिए चेतो और जान लो कि किया हुआ पाप क्षमा नहीं होता, उसका तो फल भोगना ही होता है। दण्ड भय से पाप रुकते हैं और क्षमा की बात मानने से पाप बढ़ते हैं।

हे पुराण पन्थियो! तुम्हारे ही पुराण में लिखा है-

नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाऽशुभम्॥

(ब्रह्म वै० प्रकृति० 37.16)

सैकड़ों-करोड़ों कल्पों से किये कर्म बिना भोगे क्षीण नहीं होते। किये गये शुभ-अशुभ कर्मों को अवश्य भोगना ही पड़ता है।

जैसे पुराणपन्थी पाप क्षमा होने वाली बात कहते हैं, ऐसे ही आजकल के तथाकथित गुरु भी कहते हैं। उनका कथन गुरुशरण तक है। वे कहते हैं-हमारी शरण में आओ, हमसे नामदान लो, पाप नष्ट हो जायेंगे। उनका यह कथन वेदविरुद्ध होने से मान्य नहीं है। यथार्थ में सच्चा गुरु ऐसी बात कभी नहीं कहेगा कि तुम्हारे पाप बिना भोगे नष्ट हो जायेंगे। इसलिए एक बार पुन: कहते हैं-ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता, उनका यथावत् दण्ड रूप फल देता है।

(ख) कुछ कर्मों का फल हमें तत्काल मिलता है, कुछ का इस जन्म में और कुछ का अन्य जन्मों में। यह ईश्वरीय व्यवस्था न्यायसंगत व युक्तियुक्त है। हमने भोजन किया पानी पिया, इसका फल हमें उसी समय मिलता है, हमारी भूख-प्यास की निवृत्ति हो जाती है। हम ऊपर से गिरे, हमें चोटें आयीं, फल उसी समय मिल गया। हम व्यायाम करते हैं। हमें उसका फल महीने दो महीने में दिखने लगता है। ऐसे ही कुछ अन्य कर्म भी हैं, जिनका फल हमें उसी समय वा कुछ काल बाद मिलता है, मिलने लगता है। अब ये कहें कि कर्मों का फल परमेश्वर तत्काल क्यों नहीं देता, उचित नहीं। हाँ, जिन कर्मों का फल परमेश्वर को तत्काल देना है, उसका तत्काल देता है, सभी कर्मों का नहीं। सभी कर्मों का फल तत्काल मिल ही नहीं सकता। जैसे कोई

औषधि खाने के छह महीने बाद प्रभाव करती है और कोई खाते ही प्रभाव करती है। ऐसे ही कुछ कर्मों का फल तत्काल और कुछ कर्मों का फल उनका समय आने पर। सभी कर्मों का तत्काल फल देने पर परमेश्वर की न्यायकारिता भी नहीं रहेगी, क्योंकि जिन कर्मों के फलस्वरूप हमें मनुष्य शरीर मिला हुआ है, अभी उसको छुड़ा अन्य शरीर देना न्याय नहीं। पहले इस शरीर का भोग पूरा हो जाये, उसके बाद अन्य भोग देना उचित है। इसी में परमेश्वर की दया भी है कि कर्म करने वाले को अभी अवसर है, वह अपने जीवन को उत्कृष्ट बना लेवे, बना सके। यदि तत्काल फल दे दिया तो उसको श्रेष्ठ बनने का अवसर नहीं रहा।

जिन कर्मों का फल इस जन्म में भोग ही नहीं सकते, उन कर्मों का फल परमेश्वर तत्काल कैसे देवे? परमेश्वर सर्वज्ञ है, जब जिस कर्म के फल देने का समय आता है, उसी समय फल देता है। वह कर्म चाहे तत्काल फल देने वाला हो वा इस जन्म अथवा अन्य जन्म में। फल तो परमेश्वर नियत समय पर ही देता है।

रही बात कर्मफल के प्रति शंका, अविश्वास वाली तो जिसको परमेश्वर की न्याय व्यवस्था समझ में नहीं आयी है, उसको तो ये हो ही सकते हैं, किन्तु जिसको कर्मफल सिद्धान्त ठीक-ठीक समझ आ गया है, उसको इसके प्रति शंका, अविश्वास कदापि नहीं हो सकता। इसलिए कर्मफल सिद्धान्त को समझें और शंका अविश्वास से दूर रहें।

जिज्ञासा-9. ऐसा वेदों में, प्रवचनों में, सत्संग इत्यादि में सुना है, पढ़ा है कि ईश्वर की बनाई कोई भी वस्तु, जीव, तत्त्व बेकार नहीं होता है और वह समाज प्रकृति अथवा जीव मात्र के लिए किसी न किसी दृष्टि से उपयोगी होता ही है।

इस सम्बन्ध में एक शंका उत्पन्न हुई है कि स्त्री एवं पुरुष के अलावा जो नपुंसक जाति है, जिन्हें कई नामों से पुकारा जाता है एवं प्रचलित शब्दों में इन्हें किन्नर या हिजड़ा बोला जाता है, उनका समाजहित में क्या उपयोग हो सकता है जो कि अभी तक समाज ने नहीं पहचाना है या इस समाज ने उनकी वास्तविक उपयोगिता अभी तक आँकी ही नहीं है। इस समय ये प्रजातियाँ केवल नाच-गान इत्यादि करके अपना जीवनयापन कर रही हैं अथवा कुछ बेहूदा हरकतें करके समाज में डर पैदा करती हैं और यहाँ तक कहा जाता है कि इनकी बद्दुआयें मत लो, बहुत बुरा होता है। जो जीव खुद ही किसी बद्दुआ का मारा हो तो उसकी बद्दुआ किसी और क्या लग सकती है? यह बात तो एक बार समझ में आती है कि इन्हें जरूर किसी पिछले बुरे कर्म की सजा मिली होगी, लेकिन उसकी सजा में दया भी अवश्य होती हैं। यदि यह और स्पष्ट हो कि वेदों के अनुसार इनकी क्या उपयोगिता समाज अथवा प्रकृति के लिए हो सकती थी, जिसे कि सही मायने में अभी तक पहचाना नहीं जा सका। क्या किसी भी काल में इनकी कोई उपयोगिता रही है? आशा है आप प्रश्न का भाव समझ गये होंगे। कृपया, शंका-समाधान करें।

-सुनील कुमार अरोड़ा, 56/22, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज०)

समाधान-हाँ, आपने ठीक पढ़ा-सुना है कि परमेश्वर का कोई भी कार्य व्यर्थ नहीं होता, किसी न किसी दृष्टि से उपयोगी ही होता है। रही बात मनुष्यों में नपुंसक स्त्री-पुरुषों की, **तो ये सन्तान उत्पत्ति को छोड़कर वे सब काम कर सकते हैं, जो काम एक साधारण मनुष्य करता है।** परमेश्वर ने इनको भी अपनी उन्नति करने की उतनी ही स्वतन्त्रता दे रखी है, जितनी कि अन्य मनुष्यों को। ये भी डॉक्टर, इंजीनियर, जज, वकील, प्रबन्धक, अध्यापक, विद्वान्, साधक, योगी, समाधिस्थ बन मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं, यह क्षमता इनमें भी है।

वर्तमान में जो अवस्था इनकी देखी जा रही है, उस अवस्था के वे अकेले दोषी नहीं हैं, इनके साथ-साथ समाज भी दोषी है कि उनको अपने से पृथक् कर एक वर्ग विशेष में रख दिया। समाज ने इनको वह सम्मान न दिया, वह व्यवहार न किया, जो एक मनुष्य को देना चाहिए, करना चाहिए था। इनको हीन दृष्टि से देखकर हेय कर दिया। यदि आज भी समाज इनके प्रति आत्मीयता का भाव रखकर प्रेम से बदलना चाहें तो ये बदल सकते हैं। ये भी नाच-गान एवं विपरीत चेष्टाएँ छोड़कर अपनी आजीविका सभ्यता पूर्वक कर सकते हैं। इनमें सभी विपरीत चेष्टाएँ करने वाले नहीं होते, कुछ अच्छे भी होते हैं। देखने में आता है कि ये भी साधु-संन्यासियों के प्रति आदर-सत्कार का भाव रखते हैं, उनके सामने विपरीत चेष्टायें आदि भी नहीं करते।

क्रमशः अगले अंक में...

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के उद्घोषक नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस के 123वें (23.01.1897) जन्मदिवस पर उनके कुछ संस्करण

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

(१) **विद्रोही सुभाष**- कटक (उड़ीसा) का एक बंगाली सम्पन्न परिवार रायबहादुर जानकीनाथ प्रभावती

जिसका पुत्र कटक के विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् कलकत्ता के प्रेसीडैन्सी कॉलेज में प्रवेश लेता है वहाँ पर एक अंग्रेज़ प्रोफेसर जो भारतीयों को हीन भावना से देखता था, ऐसे प्रोफेसर को एक देशप्रेमी छात्र का साहसपूर्ण उत्तर-

प्रोफेसर का नाम था सी. एफ. ओटन। इस प्रोफेसर ने एक भारतीय विद्यार्थी से कोई प्रश्न पूछा। वह छात्र ठीक से उत्तर नहीं दे पाया, क्योंकि उसने प्रश्न ठीक से नहीं सुना था। इतनी सी बात पर प्रोफेसर ने क्रोध में तड़ककर कहा-

"यू रास्कल" (बदमाश)। "सर मैं आपके प्रश्न को ठीक से समझ नहीं सका।" छात्र ने विनम्रता से उत्तर दिया। "यू ब्लैक मन्की (काले बन्दर) तू प्रश्न को ठीक से नहीं समझ सकता" प्रोफेसर ने विनम्रता का उत्तर जातीय गाली से दिया। कक्षा में बैठे एक देशभक्त छात्र को यह गाली सहन नहीं हुई। उसने आक्रोश भरे शब्दों में कहा, "प्रोफेसर साहब, जरा सम्भल कर बोला कीजिए। पूरी कौम को गाली देना अनुचित है।" प्रोफेसर ने और अधिक अहंकार में आकर एक और गाली देते हुए कहा, "यू ब्लडी।" उस छात्र के हृदय को इन अपमानजनक गालियों ने छलनी कर दिया। उसने उस अंग्रेज प्रोफेसर को कहा, "हमारी आजादी छीनकर हमें गुलाम बनाकर हमें गालियों से अपमानित भी करते हो।" प्रोफेसर कक्षा से बाहर जाते-जाते कह गये, "शट अप यू ब्लास्टर।" बस इतना कहना था कि इस साहसी छात्र ने उस प्रोफेसर के मुँह पर जोरदार तमाचा जड़ दिया। प्रोफेसर के द्वारा, प्रिन्सीपल को शिकायत किये जाने पर उस छात्र को कॉलेज से चाहे निकाल दिया गया हो, परन्तु यह तमाचा उस छात्र ने उस प्रोफेसर को नहीं बल्कि अंग्रेज सरकार के मुँह पर मारा था। वह छात्र अब विद्रोही बन गया था। वह छात्र था सुभाषचन्द्र बोस। ऐसे महामना को आज हम उनके १२३ वें जन्मदिवस पर शत शत नमन करते हैं।

इस घटना के पश्चात् विद्रोही सुभाष सोचने लगे कि अब तुम्हारा छात्र जीवन अन्धकारमय हो गया है, परन्तु उन्हें इस बात के लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं था अपितु एक प्रकार का सन्तोष था कि जो भी किया, ठीक ही किया। यह तो आत्मसम्मान के लिए, एक पवित्र उद्देश्य के लिए किया गया त्याग था और त्याग से बढ़कर संसार में है ही क्या? उन्हीं के शब्दों में-

"मेरे प्रिन्सीपल ने मुझे कॉलेज से निकालकर मेरे साथ बहुत भलाई की। सन् १९१६ में घटी इस घटना ने मेरे अन्दर अजीब सा उत्साह और आत्मविश्वास भर दिया था। मैंने पहली बार अपने बलबूते पर एक कदम उठाया था और नेतृत्व की दिशा में यह मेरा पहला कदम था। मैंने थोपे हुए इस अवकाश का समय कटक में समाज सेवा और आत्मिक शिक्षा प्राप्त करने में उपयोग किया।"

वह आडम्बरों में विश्वास नहीं करते थे- सुभाष तीव्र स्वभाव के थे। अन्याय को सहन न करना उनका विशेष गुण था। आरम्भ से ही उनके विचार ऊँचे थे। उनका आडम्बरों में विश्वास नहीं था। उन्होंने एक बार कहा था, "मुझे कृष्ण का वह रूप जो तीर्थों में पूज्य है, आकर्षित नहीं करता। मैं तो कृष्ण के उस स्वरूप का पुजारी हूँ, जो उन्होंने कुरुक्षेत्र के धर्मयुद्ध में दिखाया था।"

दुखियों के प्रति दया एवं धार्मिक जिज्ञासा के भरपूर- राय बहादुर जानकीनाथ यह चाहते थे कि सुभाष एक बहुत बड़ा सरकारी अफ़सर बने, परन्तु बाल्यावस्था से ही सुभाष के विचार भिन्न थे। उनके हृदय में धार्मिक प्रवृत्ति के साथ-साथ दुखियों के प्रति दया की भावना प्राथमिक रूप से विद्यमान थी। धनी परिवार में जन्म लेकर घर में पृथ्वी पर सोना, धोती कुर्ता पहनना उनके त्याग को दर्शाता था। जब वे आठ वर्ष के थे तो भानपुर में बीमारी फैल गई। सुभाष बिना घर बताये वहाँ से चले गये और दो मास तक

उन पीड़ित व्यक्तियों की सेवा करते रहे। इसी प्रकार वे जब १६ वर्ष के थे तो वे धार्मिक जिज्ञासा व साधुओं के श्रुत अलौकिक चरित्र को जानने के आकर्षण में घर छोड़कर ऋषिकेश, हरिद्वार, गया, मथुरा, वृन्दावन आदि स्थानों पर घूमते रहे।

आज़ादी के दीवाने का स्वागत खून की होली से होना चाहिये- एक सशस्त्र गोरे ने आगे बढ़कर । ़ड़े का लौहद्वार खोल दिया और जैसे ही बन्दी शेर (सुभाषचन्द्र बोस) सींखचों से बाहर आया, एक ओजपूर्ण कोलाहल धरती और आकाश को गुंजरित कर उठा "इन्कलाब जिन्दाबाद, नेताजी जिन्दाबाद, आजादी अधिकार हमारा है।" सिंह बड़ी निर्भीकता और गौरव के साथ आगे-आगे चल रहा था और हर्षोल्लासित अपार जन समूह गगनभेदी नारों के साथ उसका अनुसरण कर रहा था। जैसे ही नेता जी मंच पर उपस्थित हुए, वहाँ की उपस्थित जनता ने तुमुल हर्ष के साथ गगनभेदी नारा लगाया, "जयहिन्द" इसके साथ ही वहाँ पर सात्विक शान्ति छा गई। इसके साथ ही एक मधुर और श्रद्धासिक्त कण्ठ स्वर ने उस सात्विक शान्ति को भंग करते हुए कहा, "बन्दे सुभाष दा बन्दे" यह मधुर स्वर किसी और का नहीं बल्कि सुभाष बोस की बाल सखा कमला का था जो इस क्रान्तिदूत के अभिनन्दन के लिए मंच पर उपस्थित थी। क्रान्तिदूत के तेजस्वी मुखमण्डल पर गौरव अनुभूति की पवित्र मुस्कान थिरकी और उसके मुख से निकला, "कमला...।" उसी समय कमला ने गुलाब की सुगन्धित पुष्पों की एक माला क्रान्तिदूत के गले में डाल दी। यह क्रान्तिदूत के क्रान्तिप्रयाण का अभिनन्दन था। ज्यों ही इस क्रान्तिदूत के उन्नत ललाट पर रोली अंकित करने के लिए हाथ बढ़ाया, त्यों ही सुभाष बोस के मुख से निकला, "मेरे विचार से आजादी के दीवाने का स्वागत खून की रोली से होना चाहिये...। कमला! वह क्षण कब आयेगा जब तुम खून की रोली से मेरी क्रान्ति प्रयाण का अभिनन्दन करोगी?"

कमला ने कहा, "अभी इसी क्षण देव...।" उसने उसी दम ब्लेड मंगाकर अपना अगूँठा चीर लिया। रक्त की गाढ़ी धारा छलक पड़ी।

"तुम धन्य हो देवी...। मैं तुम्हारी इस रक्त रोली को व्यर्थ नहीं जाने दूँगा।" कहते हुए क्रान्तिदेवता ने उसके समक्ष अपना मस्तक नत कर दिया। वातावरण एक बार पुनः हर्षनाद से झंकृत हो उठा। नमन है आज उस देवी (कमला) सुभाष बोस की बाल सखा को जिसने इस क्रान्तिदूत के मार्ग को और दृढ़ बना दिया।

मुझे कोई शारीरिक रोग नहीं है, यह समूचे देश का दर्द है- सुभाष की फटी-फटी आँखें समाचार-पत्र पर टिकी थीं- ऊपर ही मोटे-मोटे अक्षरों में छपा था- जाजपुर में हैजे का भीषण प्रकोप और उसके नीचे हैजे से होने वाली क्षतियों का अत्यन्त मार्मिक शब्दों में वर्णन किया गया था। सुभाष की अन्तरात्मा इस समाचार को जानकर हाहाकर कर उठी। कोई इस भीषण काल से उनकी रक्षा करने वाला नहीं? क्या हमें इस दुःखद घटना को सुनकर भी चुप बैठे रहना चाहिये? यदि हाँ तो हम मनुष्य होकर भी पशु से बदतर हैं।

इसी बीच बड़े स्नेह से पुकारती हुई उसकी बालसखा ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, "सुभाष दा, तुम्हारा नेचर मेरी समझ में नहीं आता, हर घड़ी गम्भीर बने रहते हो। तुम्हारे हृदय में कोई विशेष दर्द है।" सुभाष ने उत्तर दिया, "तू ठीक कहती है, कमला, सचमुच मेरे दिल में एक भयानक दर्द हो रहा है और मैं उस दर्द से छटपटा रहा हूँ।" कमला इस उत्तर से बैचेन हो गई उसी समय सुभाष ने कहा, "अरे, तू तो निरी बच्ची है। मेरा यह रोग कोई शारीरिक रोग नहीं है, यह तो समूचे देश का दर्द है, और सम्पूर्ण भारत की वेदना है। आज मेरे दुःख और चिन्ता का कारण जाजपुर में फैला भयंकर हैजा है, जो अनगिनत प्राणियों को मृत्यु का ग्रास बना रहा है।" कमला ने कहा, "तुम्हारी पीड़ा सही है, परन्तु हम ऐसी ऊँची भावनायें रखते हुए भी क्या कर सकते हैं?"

सुभाष ने उत्तर दिया, "हम बहुत कुछ कर सकते हैं? मैं मानता हूँ कि मैं मनुष्य की शारीरिक व्याधि को अपने ऊपर नहीं ले सकता, किन्तु उस व्याधि को समाप्त करने में उनकी सेवा करके सहयोग कर सकता हूँ।" कमला ने कहा, "क्या रायबहादुर (आपके पिता) आपके इस कार्य से रुष्ट नहीं हो जायेगे?" सुभाष ने कहा, "यह ठीक है कि वे मेरे इस कार्य से अपनी प्रतिष्ठा में हानि मानेंगे, परन्तु मैंने दृढ़ निश्चय कर रखा है कि मैं अवश्य उन रोगियों की सेवा के लिए जाऊँगा।"

क्रमशः अगले अंक में...

सी.ए.ए. आवश्यक व देशहित में है

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

नागरिकता संशोधन अधिनियम अर्थात् केब जिसे सी.ए.बी. सिटीजनशिप एमेंडमेंट बिल कहते हैं, को लेकर

देश में चारों ओर आगजनी, तोड़फोड़ हुई। इसको लागू करने पर विरोध हुआ। एक सम्प्रदाय विशेष को भड़काया गया जैसा कि विरोधी राजनीतिक दल भ्रम फैला रहे हैं, वैसा कुछ नहीं है। यह बिल भारत के नागरिक जो पहले से रहते आए हैं, हिन्दुस्तान के नागरिक भले ही वह मुसलमान हैं, उनके विरुद्ध नहीं है। यह बिल उन घुसपैठियों के विरुद्ध है, जो भारत में चोरी से आकर बस गए और छल से अपने आधार कार्ड जो जाली हैं, बनवा लिए। भारत में ऐसे रोहिंग्या मुसलमानों की संख्या लाखों में है। बांग्लादेशी भी हैं जो अवैध रूप से रह रहे हैं। आखिर किसी के घर में दूसरा कैसे व क्यों घुसकर, छिपकर, चोरी से या सीनाजोरी से बैठ जाएगा? यह ऐसे ही घुसपैठिए हैं, जो भारत में शरण लिए हैं, यहाँ विरोधी दलों को यह वोट भी देते हैं। अर्थात् एक तो चोरी ऊपर से सीनाजोरी।

नागरिकता संशोधन कानून 2019 से उन्हें राहत मिलेगी, जो अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि में अल्पसंख्यक रह रहे हैं, उन्हें पीड़ित किया जा रहा है। जो 18% से आज मात्र 2% रह गए हैं, जिनको बल पूर्वक (अन्य मत) इस्लाम में मतान्तरित कर दिया गया। उनकी बेटियों को उठाकर मुसलमान बना लिया जाता है। निकाह कर लिया जाता है। पुरुषों को मार भी दिया जाता है। हिन्दू, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध आदि वहाँ अल्पसंख्यक हैं, जिनको यातनाएँ दी जाती हैं व धर्मान्तरित कर दिया जाता है। उनका जीवन पाकिस्तान में नारकीय जीवन है। उन्हें कोई सुरक्षा नहीं, कोई धार्मिक अधिकार नहीं, कानून भी उनका पक्ष नहीं लेता। पाकिस्तान में जो भी इस्लाम से अलग अन्य धर्म मत सम्प्रदाय वाले लोग हैं, उनके साथ पूर्ण भेदभाव, पक्षपात पूर्ण व्यवहार होता है। अल्पसंख्यक हिन्दुओं का जीवन वहाँ बद से बदतर है। यहाँ हिन्दुओं के साथ ऐसा कुत्सित व्यवहार मानवीयता के विरुद्ध है। ऐसे में हिन्दू अल्पसंख्यक पाकिस्तान से कहाँ जाएँ? भारत ही उनके लिए ऐसा देश है जहाँ वह आकर रह सकते हैं। यह बिल (कानून) उन हिन्दुओं के लिए अच्छा है।

नागरिकता संशोधन विधेयक 2019 को राष्ट्रपति महोदय ने 12 दिसम्बर को मंजूरी दे दी है। पड़ोसी देशों में अलपसंख्यकों अर्थात् हिन्दू, जैन, सिख, पारसी, ईसाइयों पर अत्याचार के मामले कई बार सदन में उठाए जा चुके हैं। यह कोई नया नहीं इसकी मांग व आवश्यकता पहले से ही महसूस की जा रही थी। पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा व बचाव के लिए महात्मा गांधी ने कहा था कि जिन लोगों को पाकिस्तान से भगाया गया था, उन्हें पता होना चाहिए कि वे पूरे भारत के नागरिक थे... उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि वे भारत की सेवा करने और उनकी महिमा से जुड़ने के लिए पैदा हुए थे।

(12 जुलाई, 1947 प्रार्थना सभा)

भारत के पुराने बड़े नेताओं ने भी पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को प्रताड़ित करने व जबरन धर्म परिवर्तन पर विचार दिए हैं। सीताभि पट्टा रमैया, जे.बी. कृपलानी, जवाहरलाल नेहरू, अबुल कलाम आजाद, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, त्रिदिव कुमार चौधरी, एच.एन. मुखर्जी, राममनोहर लोहिया, आईके गुजरात व इन्दिरा गांधी जैसे गणमान्यों ने अल्पसंख्यक जो विदेशों में सताये जा रहे हैं, उनकी सुरक्षा व बचाव होना चाहिए ऐसे बयान दिए जाते रहे हैं।

अभी यूसुफ योहाना (ईसाई) को जबरन धर्म परिवर्तन कर यूसुफ मोहम्मद बना इस्लाम ग्रहण करा दिए। यह पाकिस्तान में ही हुआ है तथा पाकिस्तान में ही हिन्दू क्रिकेटर दानिश कनेरिया को धर्म परिवर्तन करने, इस्लाम ग्रहण करने हेतु प्रताड़ित कर सताया जा रहा है। धर्म परिवर्तन हेतु दबाव डाला जा रहा है। जैसा कि समाचार पत्र व चैनल से यह सूचना 28.12.19 को मिली। जब इतने बड़े बल्लेबाज के साथ वहाँ इतना अधिक भेदभाव किया जा रहा है तो साधारण अल्पसंख्यकों के साथ कैसा हो रहा होगा? यह सत्य है कि वहाँ अल्पसंख्यकों को सताया व भयभीत किया जाता है। लूटमार, बलात्कार व जबरन धर्म परिवर्तन किए जाते हैं। आज केब एन.पी.आर. राष्ट्र की आवश्यकता है। अल्पसंख्यक जो विदेशों में सताए जा रहे हैं, उनके लिए उचित कदम है।

मानव जाति की अन्यान्योत्तम सम्पत्ति ईश्वर एवं वेद

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वर्तमान समय में मनुष्य का उद्देश्य धन सम्पत्ति का अर्जन व उससे सुख व सुविधाओं का भोग बन गया है। इसी कारण से संसार में सर्वत्र पाप, भ्रष्टाचार, अन्याय, शोषण, अभाव, भूख, अकाल मृत्यु आदि देखने को मिलती हैं। इसके अतिरिक्त अविद्यायुक्त मत-मतान्तर अपने प्रसार की योजनायें बनाकर भारत जैसे देश की सत्ता पर नियंत्रण करना चाहते हैं। विगत बारह सौ वर्षों से यह कृत्य देखने को मिल रहा है। आर्य जाति के विरोधियों को इसमें सफलता भी मिली है। इस अवधि में अनेक ऐसे देश हैं जहां वेदों वा सनातन मत की अनुयायी प्रजा का प्रभाव धीरे-धीरे कम होता गया और वहां वैदिक मत को मानने वाली जनसंख्या लुप्त होती गयी। यह सत्य एवं यथार्थ है कि वेद मानवता के प्रसारक ग्रन्थ हैं। वेदों की उत्पत्ति किन्हीं अल्पज्ञ, अनपढ़ व अज्ञानी मनुष्यों ने नहीं अपितु इस सृष्टि के रचयिता, अनादि, नित्य, अविनाशी, अमर, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने की है। आर्यों व सज्जन पुरुषों के आलस्य व प्रमाद के कारण ही आज की विषम परिस्थितियां उत्पन्न हुई हैं। कई बार विचार करने पर वेद एवं वैदिक धर्म एवं संस्कृति का भविष्य निराशाजनक प्रतीत होने लगता है। हमें अपनी चिन्ता नहीं। हम तो कुछ महीनों व वर्षों में इस संसार से चले जायेंगे परन्तु चिन्ता सत्य व तथ्यों पर आधारित सनातन धर्म व संस्कृति जिसका सृजन व आविर्भाव स्वमेव परमात्मा ने किया, उसकी रक्षा व विनाश से बचाने सहित भावी पीढ़ियों की है। ऋषि दयानन्द (1825-1883) ने जब योग के द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार किया, उन्हें विद्यागुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी के चरणों में बैठकर सत्यासत्य को जानने का अवसर मिला और जब उन्होंने वेदों का पावन सत्य स्वरूप जाना व प्राप्त किया, तब वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ईश्वर प्रदत्त वेद और वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा मानवता की रक्षार्थ मानव मात्र का सर्वोपरि कर्तव्य है।

देश व संसार के जो लोग वेद एवं वैदिक धर्म व संस्कृति के विरोधी हैं वह अविद्या से युक्त हैं। अविद्या से युक्त मनुष्य न केवल दूसरों की हानि करता है अपितु स्वयं की भी हानि भी करता है। ऐसा ही हो रहा है। आज संसार में धार्मिक जगत में अविद्या व्याप्त है। सत्य व यथार्थ धर्म का ज्ञान वेदों व वेदों के अनुयायी ऋषियों के ग्रन्थों यथा दर्शन एवं उपनिषदों आदि में प्राप्त होता है। इन साहित्य की देश-विदेश में सर्वत्र उपेक्षा हो रही है। ईश्वर का सत्य व यथार्थ स्वरूप हमें प्राप्त है, परन्तु विश्व के लोग इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। इस कारण से वह अपने-अपने मतों की मान्यताओं पर स्थित हैं। जैसा उनके आचार्य व धर्मगुरु उन्हें कहते व बताते हैं, उससे बाहर सत्यासत्य के विषय में वह नहीं सोचते। परमात्मा ने प्रत्येक व्यक्ति वा मनुष्य को चिन्तन व विचार करने के लिये पृथक्-पृथक् बुद्धि दी है। अपनी अपनी बुद्धि का उपयोग करना, ज्ञान प्राप्त कर इसकी वृद्धि करना व इसे सत्यासत्य के निर्णय करने में समर्थ बनाना प्रत्येक व्यक्ति वा मनुष्य सहित देश, समाज व सभी सरकारों का कर्तव्य होता है। पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध के बाद उत्पन्न अविद्या व अविद्यायुक्त मतों ने इस कार्य में बाधा खड़ी की है। यही कारण हैं कि लोग सत्य को स्वीकार करने में तत्पर नहीं है। इसी कारण ऋषि दयानन्द को आर्यसमाज के नियमों में सत्य को सर्वाधिक महत्त्व देना पड़ा। आर्यसमाज का नियम है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहियें।

आर्यसमाज के इन नियमों का तात्पर्य यही है कि सब सत्य को जानें और सत्य को अपने आचरण में लायें। सत्याचरण ही मनुष्य का धर्म है। वेद क्योंकि सर्वांश में सत्य मान्यताओं से युक्त ग्रन्थ हैं, इसीलिये वेदों के अध्ययन, चिन्तन, मनन, उनका आचरण एवं व्यवहार करने को ही धर्म वा परमधर्म की संज्ञा हमारे प्राचीन ऋषियों ने दी थी जिसका अनुकरण व अनुगमन आधुनिक काल में सृष्टि के सभी ऋषियों के प्रतिनिधि व उत्तराधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आदर्श व मर्यादित रूप में अपने जीवन में किया है। हमारा व मानव जाति का सौभाग्य है कि महाभारत के पांच हजार वर्ष बाद हमें एक आप्त पुरुष, वेदों का मर्मज्ञ, उनका प्रचारक तथा वैदिक मान्यताओं से युक्त सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, ऋग्वेद-यजुर्वेद भाष्य आदि

अनेकानेक ग्रन्थ व उपदेश देने वाला विश्व का सर्वोपरि महान् व महानतम पुरुष मिला। भारत के कुछ विवेकी मनुष्यों ने उनके वेदों के सन्देश को मानवमात्र व प्राणिमात्र का कल्याण करने वाला जानकर उसका अनुगमन किया परन्तु विश्व की एक बड़ी जनसंख्या ने उनके सत्य सन्देश पर ध्यान नहीं दिया। इससे हानि यह हुई विश्व के सभी लोग वेदों के ज्ञान से लाभान्वित नहीं हो सके। विश्व से हिंसा सहित अज्ञान, अन्याय, अत्याचार, शोषण, अभाव एवं अविद्यायुक्त मतों की विश्व पर अधिकार करने की प्रवृत्ति दूर नहीं हुई।

आर्यसमाज ने अपने आरम्भ काल सन् 1875 से आरम्भ करके उसके बाद अनेक वर्षों तक देश व विश्व के लोगों को जगाने का कार्य किया, हिन्दी, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में अनेक उच्च कोटि के ग्रन्थों का प्रणयन व प्रचार किया परन्तु समय के साथ आर्यसमाज में भी शिथिलता आ गई। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ देशी-विदेशी वेद विरोधी शक्तियों ने भी आर्यसमाज को निष्क्रिय एवं निष्प्रभावी करने का गुप्तरूप से प्रयत्न व कार्य किया है, जिसका परिणाम हम वर्तमान समय में एक प्रकार की अन्तर्कलह के रूप में आर्यसमाज में देख रहे हैं। ईश्वर को मानने वाले एक विचारों के लोग भी जब आपसे में संगठित नहीं हो सकते, तो आश्चर्य होता है और इसके परिणामों को सोचकर चिन्ता होती है। यदि अन्तर्कलह को कुचल कर ईश्वर, वेद, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सभी अनुयायी सत्य को ग्रहण व धारण करने का संकल्प लेकर संगठित रूप से प्रचार करने निकल पड़ते तो हमें लगता है कि आज देश व विश्व की वर्तमान से भिन्न तस्वीर होती। आर्यसमाज अपनी इतनी अधिक हानि करने पर भी संभल नहीं पा रहा है। हमें यह देखकर भी पीड़ा होती है कि जब आर्यसमाजी नेता कहलाने वाले लोग देश, समाज व आर्यसमाज की मान्यताओं के विरोधी सार्वजनिक बयान देते दिखाई देते हैं। आर्यसमाज में इतनी शक्ति नहीं की इन्हें बाहर का रास्ता दिखा सकें। ऐसे लोगों को भी जब एषणाओं से युक्त अनुयायी मिल जाते हैं।

ऐसी स्थिति में ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में लिखे यह शब्द स्मरण हो आते हैं। ऋषि दयानन्द जी कहते हैं 'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों (अंग्रेजों व यवनों) के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय (वेदसम्मत आर्यों का) राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। किन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। विना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिये जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्रपुरुषों का काम है।'

हम अनुभव करते हैं कि देश पर वैदिक धर्म एवं संस्कृति के पराभव के बादल मंडरा रहे हैं और इसके मानने वाले अधिकांश लोग इससे बेपरवाह होकर सुख-सुविधाओं के लिये पुरुषार्थ करने में लगे हैं। किसी के पास अपने अज्ञान, असंगठन, परस्पर विरोधी विचारों, मान्यताओं व परम्पराओं पर विचार करने व बुराइयों को दूर कर वैदिक सत्य परम्पराओं को अपनाने व उनका प्रचार करने का समय ही नहीं है। आर्य-हिन्दुओं की जनसंख्या देश की आजादी के बाद से निरन्तर घट रही है। विरोधी लोग हमारे अपने भाइयों को जातिवाद व भेदभाव के आधार पर हमारे भाइयों को हमसे दूर व अपने निकट कर रहे हैं। यह खतरे की घंटी है। यदि अब भी हम अज्ञान, अन्धविश्वास, जन्मना जातिवाद तथा सामाजिक भेदभावों को छोड़कर संगठित नहीं हुए, विरोधियों की चुनौतियों को स्वीकार उनका उपयुक्त उत्तर नहीं देंगे, तो आने वाले समय में हमारे बन्धुओं की वही दुर्गति हो सकती है जो आज पाकिस्तान, बंगलादेश व अफगानिस्तान में आर्य-हिन्दू जाति के मानने वाले लोगों की हो रही है। ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. लेखराम जी आदि महापुरुषों ने हमें चेताया था, परन्तु हमने उनकी चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया। हम धन कमाने व सम्पत्ति बढ़ाने के कार्यों में ही लगे रहे व अब भी लगे हुए हैं। हमें अपने उन भाइयों की भी चिन्ता नहीं है जिन्हें दो समय सूखी रोटी और नमक भी खाने को नसीब नहीं होता। हम मनुष्य किस प्रकार से, कैसे व क्यों कहलाते हैं, पता नहीं? ऋषि दयानन्द ने तो मनुष्य की परिभाषा में

शेष पृष्ठ 16 पर....

मकरसंक्रान्ति—क्या प्रेरणा लें?

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

श्री शेरसिंह कार्यालयाधीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने मकरसंक्रान्ति, वसन्त पंचमी, आचार्य बलदेव

स्मृति दिवस पर समयोचित लेख लिखने को कहा। इस लेख में 'मकरसंक्रान्ति' पर्व पर इस संदर्भ में थोड़ा प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं। ऋषि दयानन्द जी 'सत्यार्थप्रकाश' में स्पष्ट करते हैं कि जो पृथिवी या सूर्य को स्थिर मानते हैं, ये दोनों ही गलत हैं। पृथिवी सूर्य के चारों ओर घूमती है, जबकि सूर्य किसी अन्य ग्रह या पृथिवी की परिक्रमा न कर घूमता है। ऋषि के ऐसे विचार ही 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है', इस तथ्य की व्यावहारिक व्याख्या सिद्ध हुए। ऋषि जी के अनुसार सूर्य पृथिवी से कई गुणा बड़ा होने के कारण पृथिवी के सूर्य के गिर्द घूमने के कारण ही इस प्रमाण में दिन-रात बनते हैं। यदि सूर्य पृथिवी के गिर्द घूमता तो कई मास के दिन और रात होते। सृष्टि के ऐसे विशेष रचना आदि नियमों को दिखाकर बताकर ऋषि हमारे जैसे सामान्य जनों को ईश्वर की सत्ता का आभास दिलाते हैं, उनके ज्ञान के प्रति आस्था व उसकी भक्ति के लिए प्रेरित करते हैं। विद्वानों के अनुसार पृथिवी का सूर्य के चारों ओर घूमना क्रान्ति कहलाता है। इस चक्र को बारह राशियों में बांटा गया है। सूर्य का धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश 'मकरसंक्रान्ति' कहलाता है। अब छह मास तक सूर्य उत्तरायण हो जाता है। पृथिवी से देखने पर भी कुछ तारासमूह विशेष आकृतियों के दिखाई देते हैं। हमारे गणित ज्योतिषियों ने बारह राशियों की आकृति चिह्नित करके उन्हें अलग-अलग नाम दिये। लेकिन फलित ज्योतिष ने तो इस सृष्टि विद्या का बंटाधार कर दिया। राशियों, ग्रहों को पाखण्ड से जोड़कर आर्य सन्तानों को भीरू, पुरुषार्थहीन, परस्पर शंकालु बनाने का कार्य किया। आधुनिक कलेण्डर ने ऋतु विभाग को तथा आधुनिक शिक्षा ने ऋतुचर्या को खोकर देश के स्वास्थ्य को डुबो दिया। सृष्टि विद्या से जुड़े ऐसे पड़ाव, पर्व छोटे यज्ञों को बड़े यज्ञों में बदल देते थे तथा थोड़े दान को बड़े दान में। विद्वानों के विशेष उपदेश सत्य के प्रति नई ऊर्जा का संचार करते थे। ऋषि जी का तो स्पष्ट सन्देश है कि यदि वही यज्ञ फिर से होने लग जाए तो हमारे सुख के दिन फिर लौट आयेंगे। लेकिन आज हम 'यज्ञ' करवाने में उतावले रहते हैं, यज्ञ करने में नहीं। 'यज्ञ' करने का भी संकल्प लेना होगा। आर्य देवियाँ भी 'यज्ञ' करने का अधिकार प्राप्त करने के लिए जेल में भूख हड़ताल करती थीं। 'बिस्मिल' का यज्ञ-प्रेम तो आप जानते ही हैं। ये सभी संकल्प, कियाएँ स्वाभाविक व श्रद्धायुक्त होनी चाहिए। दिखावा नीरसता उत्पन्न करता है। 'यज्ञ' के साथ दान तो जुड़ा ही है। बाणों से बिद्ध जिस शरीर को लिए हुए जिस मृत्युञ्जय वीर ने 58 दिन तक अपने प्राण रोके रखे (इसी उत्तरायण की प्रतीक्षा में), उसी वीर के मुख से दान का महत्त्व सुनते हैं-

दैवतेभ्यः पितृभ्यश्च संविभागोऽतिथिष्वपि।
असंत्यागश्च भृत्यानां श्रेय एतदसंशयम्॥

विद्वानों, वृद्धों, अतिथियों को उनका भाग देना तथा अपने सेवकों का त्याग न करना, ये सब कल्याण प्राप्ति के निश्चित साधन हैं।

'यज्ञ' से संगतिकरण अर्थात् विद्वानों के उपदेश, आओ इस संदर्भ में भी ज्ञान व वयोवृद्ध भीष्म के एक उपदेश को लेते हैं-

ये न मानित्वमिच्छन्ति मानयन्ति च ये परान्।
मान्यमानान् नमस्यन्ति दुर्गाण्यति तरन्ति॥

जो स्वयं के सम्मान की इच्छा न करके दूसरों का सम्मान करते हैं, सम्माननीय जनों को नमस्कार करते हैं, वे भीषण कष्टों से छूट जाते हैं।

अगले लेख में वीर हकीकतराय के बलिदान दिवस पर आधुनिक समस्याओं के संदर्भ में 'धर्म के महत्त्व' पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. गुरुकुल आश्रम सलखिया जिला रायगढ़ (छत्तीसगढ़) — 17 से 19 जन० 20
2. आर्य कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जिला करनाल — 7,8,9 फर० 20

—सभामन्त्री

सच का आईना—आर्यसमाज

❑ राहुल आर्य, गाँव नयाबाँस, जिला रोहतक 8571050423, 9416677987

महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज की स्थापना का एक घोषित उद्देश्य यह था कि सम्पूर्ण भारतवर्ष राजनैतिक, सामाजिक

और धार्मिक रूप से एक सूत्र में बंधे और वह सूत्र वैदिक सूत्र हो। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उद्घोष किया कि आर्य श्रेष्ठजन हैं, वेद ईश्वरीय ज्ञान है और भारतभूमि विशिष्ट भूमि है।

स्वामी जी ने राष्ट्रवाद की एक ऐसी मशाल जलाई कि इस मशाल की रोशनी में विदेशी साम्राज्यवादियों और देशी पाखण्डी बगुला भक्तों की आँखें चौंधियाँ गईं। स्वामी जी जब वैदिक राष्ट्र की पुन: नींव के लिए वेदों की ओर लौटो का नारा देकर भारत भूमि पर निकले तो भूचाल आ गया। विदेशी साम्राज्यवादियों की निद्रा में विघ्न पड़ने लगा, देशी लकीर के फकीर उनके शत्रु बन गये किन्तु जिस भांति कुत्तों के झुण्ड के भौंकने से हाथी की सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ता तो स्वामी जी के इस रथ को कोई नहीं भाप रहा था। स्वामी जी भारत को वैदिक सूत्र में बांधने के मार्ग पर निरन्तर बढ़ते जा रहे थे। अनेक कांटे उनके मार्ग में बिछाए गए किन्तु पाखण्डवाद की छाती पर 1875 में स्वामी जी ने आर्यसमाज का ध्वज गाड़ दिया।

आर्यसमाज की स्थापना के बाद ही आर्यसमाज को समाप्त करने के षड्यन्त्र पनपने आरम्भ हो गए। इन्हीं षड्यंत्रों की भेंट नवभारत की वैचारिक और सामाजिक शान्ति के मूल स्वामी दयानन्द जी भी चढ़ गए। आजादी से पूर्व आर्यसमाज को समाप्त करने के षड्यंत्र का संचालन गोरे अंग्रेजों द्वारा किया गया और आजादी के पश्चात् यह कार्य काले अंग्रेजों ने अपने हाथों में ले लिया।

खैर आज के लेख में मेरा उद्देश्य उन षड्यंत्रों पर प्रकाश डालना नहीं है। यह कार्य अन्य लेखों में किया जाएगा। आज का लेख सत्य और आर्यसमाज का सम्बन्ध क्या है इस विषय में है। चलिए इसी विषय में आगे बढ़ते हैं। ब्रह्मसमाज के सर्वेसर्वा केशवचन्द्र सेन ब्रह्मसमाज का विलय आर्यसमाज में चाहते थे। इस विषय में वे स्वामी दयानन्द से मिले और कहा कि मैं ब्रह्मसमाज का विलय आर्यसमाज में करना चाहता हूँ किन्तु आर्यसमाज के कुछ नियम इस कार्य में आड़े आ रहे हैं। अगर कुछ नियमों में परिवर्तन हो जाये तो मैं आर्यसमाज में ब्रह्मसमाज का विलय कर दूँगा। किन्तु स्वामी दयानन्द जी का उत्तर था कि आर्यसमाज के नियमों में अंगुल भर का परिवर्तन भी नहीं होगा क्योंकि सत्य सनातन है, मेरा नहीं है।

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने कभी सत्य के साथ समझौता नहीं किया। अगर स्वामी दयानन्द चाहते तो इस भारतवर्ष के सबसे बड़े मठाधीश बन सकते थे। स्वयं मन्दिर बनवा सकते थे और अपनी मूर्तियों को दूध में स्नान करवा सकते थे, किन्तु वे सत्य के पुजारी थे कि मनुष्य कभी ईश्वर नहीं बन सकता। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता। ईश्वर साकार नहीं होता वह तो निराकार होता है।

कभी शरीयत के मानने वालों ने मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की धर्मपत्नी माता सीता पर ऐसा आक्षेप किया कि सनातन धर्म का केन्द्र जगत गुरु के खिताब से नवाजा भारत और इस भारत का हिन्दू कहा जाने वाला धर्म लाज से सिकुड़ गया। अंधविश्वासी पाखंडियों के पास कोई उत्तर नहीं था फिर आर्यसमाज ने सत्य के रूप में रंगीला रसूल का निर्माण करके मुहम्मदिया जाहिलाना विचारधारा को जवाब दिया और सनातन धर्म के आत्मविश्वास को जिंदा किया। रंगीला रसूल के सच को विश्व के सम्मुख नग्न करने के कारण आर्यसमाज के विद्वानों को प्राणों तक से हाथ धोने पड़े किन्तु सत्य के साथ समझौता नहीं किया। सत्य की रक्षा के लिए आर्यसमाज की भेंट एक नहीं है बल्कि सैकड़ों हैं, हजारों हैं। भारत में अराजकता का वह दौर जब कुरान की आयतों को पढ़कर तलवार की नोंक पर धर्म परिवर्तन किया जा रहा था तब आर्यसमाज ने सच के वैचारिक शंखनाद के साथ शुद्धि आन्दोलन का बिगुल फूंककर सनातन धर्म को जीवित रखा। जिस जामा मस्जिद के लाउडस्पीकर से इस्लाम की तरफदारी की अजाने निकलती थी उसी लाउडस्पीकर से वेदमंत्रों का उच्चारण करने वाला कोई और नहीं बल्कि आर्यसमाज ही था। आर्यसमाज ने सत्य को जीवित रखने के लिए कटने भी चलो और बढ़ते भी चलो का सिद्धान्त अपनाया। इस राष्ट्र में गोरक्षा के आन्दोलन को स्वरूप और राष्ट्रव्यापी आन्दोलन बनाने का श्रेय आर्यसमाज को ही जाता है। सच की रक्षा प्राणों के बदले अगर किसी ने की है तो वह आर्यसमाज ही है।

शहीदों के लिए (तर्ज–मेरे रश्के क़मर...)

ऐ मेरे देश के वासियों सब सुनो,
तुम शहीदों के गीतों को गाना सदा।
जान वो देश पर हैं लुटा कर गये,
इसलिए शीश उनको झुकाना सदा॥
ऐ मेरे देश के......

देश के ही लिए मर गए और जिये,
देशहित यातनाओं के प्याले पिये।
देश के ही लिए सबने ओढ़े कफ़न,
आँसू उनके लिए तुम बहाना सदा॥ 1॥
ऐ मेरे देश के......

क्रान्ति पथ पै सुनो थीं लड़ीं नारियाँ,
पैदा करती रहीं रोज चिंगारियाँ।
अपने बेटों व पतियों की दे दी बलि,
उनके साहस पै मस्तक झुकाना सदा॥ 2॥
ऐ मेरे देश के.....

छोटे बच्चे लड़े, वृद्धजन भी अड़े,
सारे गोरों के सम्मुख हुए थे खड़े।
इंकलाबी उठाये जवानों ने स्वर,
मातरम् वन्दे तुम गाते जाना सदा॥ 3॥
ऐ मेरे देश के.....

क्रान्ति की देश में ऐसी आँधी चली,
क्रूर गोरों में मच थी गई खलबली।
देख आक्रोश वीरों का गोरे भगे,
उनका रहने न पाया ठिकाना सदा॥ 4॥
ऐ मेरे देश के.....

उनको कोड़ों से अक्सर था मारा गया,
पीट कर खाल को था उतारा गया।
क्रान्ति पथ से न बिल्कुल वो पीछे हटे,
उनकी गाथा को तुम पढ़ते जाना सदा॥ 5॥
ऐ मेरे देश के.....

काले पानी की सहते रहे यातना,
माफी माँगी नहीं न करी याचना।
देशहित कोल्हू हरदम चलाते रहे,
उनके गीतों को श्रद्धा से गाना सदा॥ 6॥
ऐ मेरे देश के.....

गोलियाँ मारकर खूँ बहाया गया,
तोप से बाँधकर के उड़ाया गया।
कोई जिन्दा जलाया गया आग में,
उनके लोहू के ऋण को चुकाना सदा॥ 7॥
ऐ मेरे देश के.....

क्रूर गोरों से बिल्कुल भी घबराये न,
गोरे उनको तो भयभीत कर पाये न।
फन्दे ख़ुद फाँसियों के रहे चूमते,
उनके पथ पै सभी बढ़ते जाना सदा॥ 8॥
ऐ मेरे देश के.....

उनके गीतों को हम भी सदा गायेंगे,
गाथा उनकी सदा यूँ ही दोहरायेंगे।
वीर बलिदानियों की हमेशा हो जय,
गीत 'रोहित' के सँग गाते जाना सदा॥ 9॥
ऐ मेरे देश के.....

–रोहित आर्य, मो०-8958682489

प्रेरक वचन

- जीवन का पाठ हमें जंगलों में रहने वाले हिंसक पशु भी सिखा सकते हैं। यदि हम किसी लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं, तो उसके लिए प्रयास दिल से तथा जोरदार तरीके से करना चाहिए। –आचार्य चाणक्य
- गुण कोई किसी को नहीं सिखा सकता है। दूसरे के गुण लेने या सीखने की जब भूख मन में जागती है, तो गुण अपने आप सीख लिए जाते हैं। –महर्षि अरविंद
- सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है, जो विषय रूप से शुद्ध किया हुआ हो। शुद्ध मन लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि से मुक्त होता है। –स्वामी शंकराचार्य
- जैसे पवन सुख देता हुआ सबके रहने का स्थान हो रहा है वैसे ही विद्वान् को होना चाहिए।
- जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा या आप्त विद्वान् न हो, तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्ष सुख से अधिक कोई सुख है। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

संकलन–भलेराम आर्य गांव-सांघी (रोहतक)

जौ का पानी पीने से खत्म होती है पेट की चर्बी

अगर आप आसानी से वजन कम करना चाहते हैं तो जौ का पानी आपके लिए फायदेमंद है। यह फाइबर का समृद्ध स्रोत है जो आपको अधिक समय तक भरा रखता है।

हेल्दी और फिट रहने के लिए शरीर का अतिरिक्त वजन कम करना महत्त्वपूर्ण है। अतिरिक्त शरीर के वजन से कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं जैसे मोटापा, हृदय और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं। लेकिन वजन कम करना आसान नहीं है, लोग वजन कम करने के लिए विभिन्न तरीकों और तकनीक का पालन करते हैं। वे अतिरिक्त वजन कम करने के लिए कठिन कसरत दिनचर्या और आहार योजना का पालन करते हैं।

दुर्भाग्य से, बहुत से लोग ऊब गए या निराश हो गए क्योंकि इन विधियों और तकनीकों का पालन करना काफी कठिन है। अगर आप आसानी से वजन कम करना चाहते हैं तो जौ का पानी आपके लिए फायदेमंद है। यह फाइबर का समृद्ध स्रोत है जो आपको अधिक समय तक भरा रखता है। शरीर से अत्यधिक वजन कम करने के लिए एक गिलास जौ का पानी फायदेमंद होता है।

वजन कम करने के लिए जौ का पानी कितना फायदेमंद है? आपको जंक फूड से दूर रखता है। पाचन तंत्र को बेहतर बनाता है। कैलोरी कम करता है। आपको जंक फूड से दूर रखता है।

जौ का पानी फाइबर का अच्छा स्रोत है। पर्याप्त फाइबर आपके पेट को अधिक समय तक भरा-भरा रखता है और जंक फूड की क्रेविंग को कम करता है। इसलिए, लंबे समय तक भरा हुआ पेट आपको वजन कम करने में मदद करता है। बेहतर परिणामों के लिए नियमित रूप से एक गिलास जौ के पानी का सेवन करें।

पाचन तंत्र को बेहतर बनाता है-जौ के पानी का सेवन आसानी से मल त्याग सुनिश्चित करता है और पाचन तंत्र को मजबूत करता है। इसके अलावा, यह कब्ज और दस्त जैसे पेट की बीमारी को भी रोकता है।

कैलोरी की गिनती-जौ के पानी में कुछ कैलोरी होती हैं। जब जौ को पानी में भिगोया जाता है, तो कैलोरी की गिनती अपने आप गिर जाती है। बेहतर परिणामों के लिए, सॉफ्ट ड्रिंक्स के बजाय एक गिलास जौ के पानी का सेवन करें।

वजन घटाने के लिए आप जौ का पानी कैसे बनाएं-कुछ जौ उबालें जब तक कि वे नरम न हो जाएं। अब, इसे निचोड़ कर पानी इकट्ठा कर लें। आपको बता दें, वजन कम करने के लिए जौ का पानी फायदेमंद है, क्योंकि यह फाइबर का अच्छा स्रोत है और इसमें बहुत कम कैलोरी होती है।

वजन कम करने के अन्य उपाय-

- वजन कम करने के लिए सबसे जरूरी है कि आप रोजाना एक्सरसाइज करें।
- खानपान पर नजर रखें, फाइबर युक्त फूड का सेवन करें, ज्यादा तली भुनी चीजों से बचें।
- सुबह नाश्ता जरूर करें। दोपहर में लंच रोजाना एक ही समय पर करें और रात का भोजन सोने से 3 घंटे पहले करें।
- 7 से 9 घंटे की नींद जरूर लें। सुबह उठकर दो ग्लास गुनगुना पानी पीएं। इसके बाद अपने दिन की शुरुआत करें।

है अपना ये त्यौहार नहीं

ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं, है अपना ये त्यौहार नहीं।
है अपनी तो ये रीत नहीं, है अपना ये व्यवहार नहीं
धरा ठिठुरती है सर्दी से, आकाश में कोहरा गहरा है।
बाग़ बाज़ारों की सरहद पर, सर्द हवा का पहरा है।
सूना है प्रकृति का आँगन, कुछ रंग नहीं, उमंग नहीं।
हर कोई है घर में दुबका हुआ, नववर्ष का ये कोई ढंग नहीं।
चंद मास अभी इंतज़ार करो, निज मन में तनिक विचार करो।
नये साल नया कुछ हो तो सही, क्यों नक़्ल में सारी अक्ल बही।
उल्लास मंद है जन-मन का, आयी है अभी बहार नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं, है अपना ये त्यौहार नहीं।
ये धुंध कुहासा छंटने दो, रातों का राज्य सिमटने दो।
प्रकृति का रूप निखरने दो, फागुन का रंग बिखरने दो।
प्रकृति दुल्हन का रूप धार, जब स्नेह-सुधा बरसायेगी।
शस्य-श्यामला धरती माता, घर-घर खुशहाली लायेगी।
तब चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि, नववर्ष मनाया जायेगा।
आर्यावर्त की पुण्य भूमि पर, जय गान सुनाया जायेगा।
युक्ति-प्रमाण से स्वयंसिद्ध, नववर्ष हमारा हो प्रसिद्ध।
आर्यों की कीर्ति सदा-सदा, नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा।
अनमोल विरासत के धनिकों को, चाहिये कोई उधार नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं, है अपना ये त्यौहार नहीं।
है अपनी तो ये रीत नहीं, है अपना ये व्यवहार नहीं।

-अंकुर 'आनंद' 1591/21 आदर्श नगर,
रोहतक-124001 मो० 9416203627

शोक-समाचार

(1) मा० हीरासिंह आर्य जी का दिनांक 7 दिसम्बर 2019 वार शनिवार को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे आजीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। वर्षों तक आर्यसमाज आर्यनगर के मंत्री रहे व वर्तमान में कोषाध्यक्ष थे। सन् 1954 से 1992 तक राजस्थान अध्यापक संघ हरियाणा ब्लॉक बाढड़ा के प्रधान रहे। मास्टर जी बहुत मिलनसार थे। सामाजिक और परोपकार की भावना से ओतप्रोत थे। वे बेटे-बेटी पौत्र-पौत्रियों से भरा परिवार छोड़कर गये हैं। ईश्वर उन्हें आत्मिक शान्ति प्रदान करे।

(2) श्री कुलवीर सिंह सुपुत्र श्री मोहब्बत सिंह जी आर्य संरक्षक आर्यसमाज आर्यनगर का निधन 14.12.2019 को हो गया। उनकी आयु 60 वर्ष थी। उन्होंने 58 वर्ष की आयु तक सी.आर.पी. में देशसेवा का कार्य किया। वे लगभग पिछले एक वर्ष से कैंसर रोग से पीड़ित थे। वे दो पुत्र व एक पुत्री सहित परिवार छोड़कर गये हैं, परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —हरिदत्त आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज आर्य नगर, तह० बाढड़ा जिला चरखी दादरी-127308

(3) आचार्य श्री ऋषिपाल जी शास्त्री, आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी का निधन दिनांक 31

दिसम्बर 2019 को हो गया। वे आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के अन्तरंग सदस्य भी रहे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-सन्तप्त परिवार को असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —सभामन्त्री

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

—रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

शोक-समाचार

श्रद्धेय श्रीमती सोना देवी धर्मपत्नी स्व० रिसलदार श्री जुगतीराम आर्य (योगमुनि) निवासी काकड़ौली

हट्ठी जिला चरखी दादरी (वर्तमान निवास-विद्यानगर, भिवानी) का दिनांक 19 दिसम्बर, 2019 को हृदयगति रुकने से स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे पूरा खुशहाल परिवार छोड़कर 85 वर्ष की आयु में इस संसार को छोड़कर पंचतत्त्व में विलीन हो गईं। उनके चार पुत्र हैं।

स्वर्गीय श्री जुगतीराम आर्य सच्चे अर्थों में आर्य थे, जिन्होंने जीवन भर दैनिक यज्ञ किया। उन्होंने 1962 की चीन के साथ तथा 1965 व 1971 की पाकिस्तान के साथ लड़ाई में भाग लिया। युद्ध के दौरान भी उन्होंने वैदिक दैनन्दिनी से जीवन व्यतीत किया। सेवानिवृत्ति के पश्चात् स्वामी दिव्यानन्द जी ने वानप्रस्थ लेकर गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल पंचगांव तथा अनाथालय भिवानी की निःस्वार्थ सेवा की।

माताजी स्नेह, त्याग व सेवाभाव की प्रतिमूर्ति थीं, जो अपने धर्मपरायण पति का समर्पित भाव से सहयोग करती थीं। शराबबन्दी के दौरान पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के साथ 25-30 व्यक्तियों का श्रद्धाभाव से 5-6 दिन तक आतिथ्य सत्कार किया, जिसकी स्वामी जी ने प्रशंसा की। परिवार को माता जी ने जिन व्यावहारिक आदर्शों की जो शिक्षा दी उनके अनुरूप परिवार चलने के लिए प्रयासरत है। माता जी को उनके शुभकर्मों के लिए सदैव याद किया जाता रहेगा तथा उनका आशीर्वाद हमेशा फलता-फूलता रहेगा।

इनके एक पुत्र डॉ० सत्यपाल आर्य सेवानिवृत्त प्रवक्ता दर्शनशास्त्र रा० महाविद्यालय भिवानी समर्पित आर्य हैं। पिता जी व माता जी के आदर्शों का वे यथाशक्ति निर्वहन करने के लिए प्रयासरत हैं।

समस्त आर्यजगत् परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके व्यथित परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —सभामन्त्री

आर्य पर्व—मकरसंक्रान्ति का महत्त्व

आर्यों का यह मकर संक्रान्ति,
पावन पर्व है।
पर्वों का यह तो मूल है,
हम सबको इस पर गर्व है॥
राम-कृष्ण ऋषिवृन्द ने, यह पर्व था माना सदा।
पाला था वैदिक धर्म को, था सत्य को जाना सदा॥
इस दिन घरों में यज्ञ पावन, आर्यजन करते थे सब।
वैदिक कथा से मानसिक, पीड़ा विषम हरते थे सब॥
ज्ञान की गंगा विमल, कहती थी प्रजा थी सुखी।
था स्वर्ग का वातावरण, कोई नहीं था तब दुःखी॥
भूप थे धर्मात्मा, प्रजा का रखते ध्यान थे।
वीर व्रतधारी, सदाचारी, महा बलवान थे॥
विश्वहित की योजना, इस दिन बनाते थे सभी।
न्यायकारी थे प्रजा का, दुःख मिटाते थे सभी॥
हम गुरु थे विश्व के, इसका दुखद परिणाम था।
भारती सब देवता थे, सब तरह आराम था॥
चोर डाकू अरु शराबी, आर्यावर्त्त में थे नहीं।
व्यभिचारी-व्यभिचारिनी, इस देश में ना थी कहीं॥
यदि महत्त्व इस त्यौहार का, संसार सारा जान ले।
गौतम-कपिल-कणाद की, शिक्षाएं दुनिया मान ले॥
सद्भावना जागे दिलों में, विश्व के कल्याण की।
सब भक्त ईश्वर के बनें, बातें तजें अज्ञान की॥
परोपकारी सब बनें, कल्याण जगती का करें।
बन हरिश्चन्द्र अश्वपति शिवि, दारिद्र दीनों के हरें॥
हे आर्यो, जागो, धर्म पालो, बचाओ विश्व को।
वेद का प्रकाश पावन, अब दिखाओ विश्व को॥
महत्त्व मकरसंक्रान्ति का, वीरो! बताओ विश्व को।
मेल आपस में करो, कुछ कर दिखाओ विश्व को॥
पंचयज्ञों का प्रचलन, फिर कराओ विश्व में।
वेद की गंगा विमल, फिर से कहाओ विश्व में॥
विश्व उपकारी दयानन्द, का कथन, मानो सभी।
धर्म के उस देवता को, अब तो पहचानो सभी॥
हे विश्व निर्माता प्रभो, कल्याण दुनिया का करो।
सद्बुद्धि दो संसार को, तुम कष्ट जगती के हरो॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

मानव जाति की अन्यान्योत्तम... पृष्ठ 10 का शेष....

कहा है कि मनुष्य वही है जो मननशील हो और स्व-आत्मवत् दूसरों को अपने समान, अपनी आत्मा के समान, समझे। हमें लगता है कि हम अपने अन्य भाइयों को इस विचार के अनुरूप नहीं समझते। यदि समझते होते तो देश में आज इतना अन्तर न होता। यदि हमें इतिहास में बने रहना है तो हमें विचार करना होगा और वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के उपाय करने ही होंगे। वह यही हैं कि हम वेद व वैदिक साहित्य का अध्ययन करें और वेदों की शिक्षाओं के अनुरूप आचरण करते हुए दूसरों को भी इसकी महत्ता का उपदेश व प्रचार करते रहें।

ईश्वर इस सृष्टि का कर्ता है। उसका सत्य ज्ञान वेदों व ऋषियों द्वारा रचित ग्रन्थों से प्राप्त होता है। उस ईश्वर का सत्यस्वरूप जानना, उसकी उपासना से अपने अवगुणों को दूरकर सद्गुणों से युक्त होना और साधना कर उसका साक्षात्कार करना सब मनुष्यों का धर्म है। जो ऐसा नही करता वह संसार के स्वामी ईश्वर का कृतघ्न होता है और जन्म-जन्मान्तरों में अपने इस पाप का दुःख रूपी दण्ड प्राप्त करता है। ईश्वर व वेद ही हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है जिससे हम कल्याण को प्राप्त होते हैं। हमारे जिन बन्धुओं के पास प्रभूत भौतिक सम्पत्ति है परन्तु जिनके पास वेद और वेदाचरण नही है, वह धनी तो हो सकता है परन्तु सफल मनुष्य कदापि नहीं हो सकता। यह ज्ञान ऋषि दयानन्द का ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश तथा वेद दोनों ही कराते हैं। सम्पत्ति और वेदाचरण दोनों का समन्वय ही मनुष्य को मर्यादित व सफल मनुष्य बनाता है। ईश्वर की उपासना व दुर्गुणों के त्याग से ही मनुष्य सुखी, सन्तुष्ट एवं सफल हो सकता है। उसके परजन्म सुधर सकते हैं।

आंगल वर्ष 2020 वर्तमान में व्यवहारिक वर्ष है। परम्परा का निर्वाह करते हुए हम अपने सभी मित्रों व बन्धुओं को इस अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनायें देते हैं। वैदिक आर्य संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2077 विक्रमी के दिन भी हम अपने सभी बन्धुओं को शुभकामनायें देंगे। ईश्वर करे सभी देशवासी असत्य व अन्धकार का मार्ग छोड़कर सन्मार्गगामी वा वेदगामी बनें।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में सहदेव बेधड़क को सम्मानित करते सभा पदाधिकारीगण।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में कैलाश कर्मठ को सम्मानित करते सभा पदाधिकारीगण।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में नरेशदत्त आर्य को सम्मानित करते सभा पदाधिकारीगण।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में योगेशदत्त आर्य को सम्मानित करते सभा पदाधिकारीगण।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में कुलदीप आर्य को सम्मानित करते सभा पदाधिकारीगण।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में उपेन्द्र आर्य को सम्मानित करते सभा पदाधिकारीगण।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में अमृता आर्या व क्षमा पुरवार को सम्मानित करते सभा पदाधिकारीगण।

विराट आर्य भजनोपदेशक महासम्मेलन में कल्याणी आर्या को सम्मानित करते सभा पदाधिकारीगण।

प्रवेश परीक्षा 23 फरवरी 2020

गुरुकुल

भैयापुर लाढ़ौत रोड़, रोहतक (हरियाणा)

मान्यता सी.बी.एस.ई. नई दिल्ली

Affiliated to C.B.S.E. (531114) New Delhi an English Medium

रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

पश्चात् प्राचार्य की विशेष अनुमति से ही प्रवेश परीक्षा सम्भव है।

प्रवेश परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक प्राप्तकर्ता छात्रों का प्रवेश निःशुल्क
दसवीं पास 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हुए छात्र का प्रवेश भी निःशुल्क

विशेषताएँ

1. सी.बी.एस.ई. बोर्ड, नई दिल्ली से 10+2 तक मान्यता प्राप्त।
2. गुरुकुल एक आधुनिक हॉस्टल है।
3. आधुनिक शिक्षा स्वास्थ्य एवं चरित्र निर्माण।
4. संध्या-हवन, योगासन, प्राणायाम खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण
5. इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के लिए भाषा प्रयोगशाला।
6. विशाल क्रीड़ा स्थल में खेलों की समुचित व्यवस्था।
7. सी.सी.टी.वी. कैमरों द्वारा निरीक्षण।
8. प्रतिवर्ष अधिकतम छात्रों की मैरिट तथा
9. शत-प्रतिशत (100%) परीक्षा परिणाम

Mob. : 9817704401, 02, 9416629972

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

– सम्पादक उमेद शर्मा